Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 61-63

पर्यावरण शिक्षा तथा विधार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 गीतिका नागर असि. प्रो. मनोविज्ञान विभाग,
के. जी. के. कॉलेज, मुरादाबाद उ..प्र. भारत।

सार

वर्तमान युग में मानव ने जितनी तेजी से तकनीकी विकास किया है उतनी ही तेजी से प्रदूषण भी बढ़ा है। इसलिये मानव को यह अवगत कराना आवश्यक है कि पर्यावरण कैसे बचाएँ? पर्यावरण मनोविज्ञान के अनुसार पर्यावरण के प्रति सजगता तथा जागरूकता स्थापित करने के लिये शिक्षा सर्वोत्तम साधन है। आज विधार्थियों में पर्यावरण के प्रति सजगता व जागरूकता लाने के लिये पर्यावरण शिक्षा पाठयक्रम का महत्वपूर्ण भाग बना दिया गया है। जिससे युवा वर्ग निरन्तर पर्यावरण बचाने के प्रति सजग रहे तथा पर्यावरण समस्याओं को सुलझााने के बारे में अपने उत्तरदायित्व का बोध कर सके। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कक्षा 10 वीं तथा 12 वीं के विधार्थियों के मध्य पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है तथा कक्षा 10 वीं तथा 12 वीं में अध्ययनरत लड़के–लड़कियों के मध्य पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना है। जिसके लिये कुल 60 विधार्थियों को आकस्मिक रूप से चयन किया गया। प्रद्धत संकलन हेतू डॉ. प्रवीन कुमार टी0पी0 कालेज माधोपुर बिहार द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया। अध्ययन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कक्षा 12 के विधार्थी कक्षा 10 के विधार्थियों की अपेक्षा पर्यावरण के प्रति सार्थक रूप से अधिक जागरूक हैं। कक्षा 12 में अध्ययनरत लड़के लड़कियों की अपेक्षा प्र्यावरण के प्रति सार्थक रूप से अधिक सजग पाये गये हैं।

मुख्य शब्दः पर्यावरण, पर्यावरण शिक्षा उद्देश्य, प्रतिदर्श, उपकरण, निष्कर्ष।

प्रस्तावनाः

पर्यावरण मनुष्य के चारों ओर का घेरा है जो उनके विकास को प्रभावित करता है यदि डार्विन के विकासवाद की ओर दृष्टि डाले तो जो जीव पर्यावरण में संघर्षरत रहता है वह ही जीवित रह पाता है। आज पर्यावरण तथा परिस्थिति का बिगड़ जाने के कारण पर्यावरणीय समस्यायें उभर रही हैं जिससे मानव व्यवहार प्रभावित हो रहा है। इसलिये पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जागरूकता तथा संरक्षण वर्तमान समय का उभरता हुआ विषय है। पर्यावरणीय मनोविज्ञान का सम्प्रत्यय 1960 के मनोवैज्ञानिक कर्ट लेविन, बेल, फिशर तथा लूमिस के अध्ययनों द्वारा हमारे लिये विचारणीय विषय बना! उन्होंने बताया कि वायू प्रदूषण, कोलाहल तथा तापमान मानव व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करता है तथा मानव के सामाजिक सम्बन्ध किस प्रकार प्रभावित होते हैं। उन्होंने सामाजिक अन्तःक्रिया को विस्तार से समझाया जिससे आज के सन्दर्भ में मानवीय पक्ष को सशक्त ठंग से प्रस्तुत किया जा सके।

कर्ट लेविन ने मानव के मनोवैज्ञानिक वातावरण को विशेष महत्व दिया है। व्यक्ति का एक लक्ष्य होता है। जिसकी प्राप्ति के लिये वह निरन्तर प्रयास करता है उसके चारों ओर का वातावरण इस प्रयास को प्रभावित करता है। यदि लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती है तब समायोजन करने के लिये व्यक्ति अपना लक्ष्य परिवर्तित कर सकता है। मनोवैज्ञानिक परिवेश व्यक्ति के जीवन विस्तार के लिये सहायक है। पर्यावरण के अन्तर्गत भौतिक पर्यावरण में भूमण्डल, वायुमण्डल, जलमण्डल तथा जैविक तत्व जैसे–पौधे, वनस्पति तथा जानवर आते है। भौतिक तत्वों के मानव की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति होती है जैसे–वायु, जल, भोजन मानव अपने जीवन की गुणवत्ता उन्नत बनाने के लिये तकनीकी उपयोग करके प्राकृतिक पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। सुख सुविधा तथा विकास प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट करके प्रदूषण का कारण बना है। वायु प्रदूषण का सीधा प्रभाव हमारे फेफड़ों तथा श्वास क्रिया पर पड़ता है तथा दमा रोग व उच्च स्तरीय पाचक्रि पाचन क्रिया रोग का कारण वायू प्रदूषण है। प्रदूषित वायु नकारात्मक भाव जागृत करती है तथा अन्तःवैयक्तिक व्यवहार को कम करती है। इसके अतिरिक्त कोलाहल तथा प्राकृतिक आपदायें मानव व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं नागर तथा पाड़े (1987) के अनुसार ''असम्भावी ध्वनि का हमारे कार्य निष्पादन पर प्रभाव पड़ता है जैसे–पढ़ना, गद्य सुलझाना, या फिर समस्या सुलझाना। अन्य अध्ययन बताते हैं कि बच्चे जो नियमित रूप से हाइवे से गुजर रहे हैं या फिर यातायात अतिक्रमण से सफर कर रहे हैं। उनके पढ़ने व याद करने की क्षमता प्रभावित होती है। कोहन तथा सिंगर के अनुसार जो व्यक्ति एयरपोर्ट के निकट रहते हैं। वे अपने स्मृति क्षमता खो देते हैं तथा अकसर चीजे रखकर भूल जाते हैं।

वर्तमान युग में मानव ने जितनी तेजी से तकनीकी विकास किया हैं उतनी ही तेजी से प्रदूषण भी बढ़ा है।

इसलिये मानव को यह अवगत कराना आवश्यक है कि पर्यावरण कैसे बचाएँ। पर्यावरण मनोविज्ञान के अनुसार पर्यावरण के प्रति सजगता तथा जागरूकता स्थापित करने के लिये शिक्षा सर्वोत्तम साधन है। पर्यावरण शिक्षा मनुष्य के व्यवहार तथा दृष्टिकोण में पर्यावरण के प्रति घनात्मक रूप से ऐसी योग्यता, चेतना व भावना विकसित करती है जिससे वह सामूहिक रूप से पर्यावरण सुरक्षा तथा संरक्षण के प्रति कार्य कर सके। पर्यावरण जागरूकता के लिये सरकारी व गैरसरकारी संस्थायें निरन्तर कार्यकर रही है। आज विधार्थियों में पर्यावरण के प्रति सजगता व जागरूकता लाने के लिये पर्यावरण शिक्षा पाठयक्रम का महत्वपूर्ण भाग बना दिया गया है। जिससे हमारा युवावर्ग निरन्तर पर्यावरण बचाने के प्रति सजग रहे तथा पर्यावरण समस्याओं को सुलझाने के बारे में अपने उत्तरायित्व का बोध कर सके। प्राकृतिक संसाधन की रक्षा तथा संभालना हमारी जिम्मेदारी है। जिससे पर्यावरण को स्वच्छ व सुन्दर बना सके।

उद्देश्य –

1. कक्षा 10 तथा 12 के विधार्थियों के मध्य पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कक्षा 10 में अध्ययनरत लड़के तथा लड़कियों के मध्य पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कक्षा 12 में अध्ययनरत लड़के तथा लड़कियों के मध्य पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रतिदर्श– प्रस्तुत अध्ययन के लिये कक्षा 10 तथा कक्षा 12 में अध्ययनरत 30–30 विधार्थियों का आकस्मिक रूप से किया गया है। लैंगिक विभिन्नता ज्ञात करने हेतू कक्षा 10 में अध्ययनरत 15 लड़के तथा 15 लड़कियों तथा कक्षा 12 में अध्ययनरत 15 लड़के तथा 15 लड़कियों का चयन किया गया है।

उपकरण– पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करने हेतु डॉ0 प्रवीन कुमार टी0पी0 कालेज मधोपुरा बिहार द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरूकता मापन परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण के कुल 51 कथन हैं जिसमें 43 सकारात्मक तथा 8 नकारात्मक कथन हैं। प्रत्येक सही उत्तर के 1 नं0 दिया गया। परीक्षण की विश्वसनीयता .84 तथा वैधता .83 प्राप्त की गयी है।

परिणाम– प्रस्तुत अध्ययन की उद्देश्य पूर्ति हेतु प्रदत संकलन के पश्चात् सांख्यिकी तकनीक की सहायता से परिणाम ज्ञात किया गया जो निम्न तालिकाओं द्वारा दर्शाया गया है।

Table No.-1

Mean, S.D., 't' value of class 10th and 12th students on environment awareness

Class	Mean	S.D.	't' value	Result
10 th Class	37.76	7.29	3.55	significant
12 th Class	43.13	4.01		

Bar diagram showing Mean score of class 10th and 12th students on environment awareness

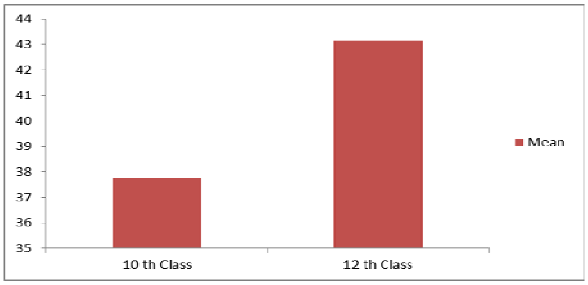

Table No.-2

Mean, S.D.,'t' value of class 10th boys - girls on environment awareness

Class 10th	Mean	S.D.	't' value	Result
Boys	41.33	6.44	1.73	unsignificant
Girls	36.93	7.42		

Table No.-3

Mean, S.D.,'t' value of class 12th boys-girls on environment awareness

Class 12th	Mean	S.D.	't' value	Result
Boys	44.13	3.13	4.59	significant
Girls	39.40	2.47		

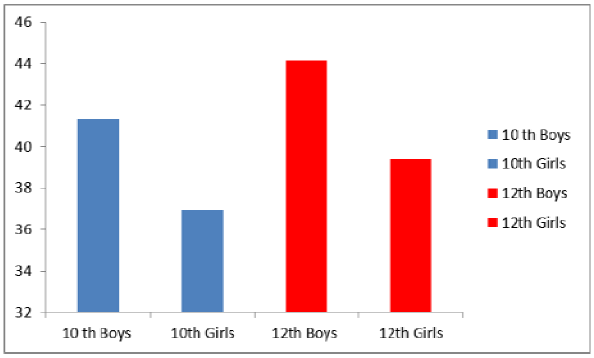

विवेचना– प्रस्तुत अध्ययन की विवेचना हेतु Table no.-1 को देखने से स्पष्ट होता है। कि कक्षा 10 के विधार्थियों का पर्यावरण जागरूकता का मध्यमान 37.76 तथा 12 के विधार्थियों का मध्यमान 43.13 है तथा दोनों समूहों का तुलनात्मक अध्यमान में टी मूल्य 3.55 प्राप्त किया गया जो .01 स्तर पर सार्थक है। जिससे स्पष्ट होता है। कक्षा 12 के विधार्थी कक्षा 10 के विधार्थियों की अपेक्षा पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हैं।

मि0 शिवकान्त असिस्टेन्ट प्रोफसर राजधानी कॉलेज दिल्ली तथा मि0 योगेश कुमार एम0आर0 कॉलेज फरीदाबाद ने माध्यमिक स्कूल के विधार्थियों की पर्यावरण जागरूकता अध्ययन के अनुसार पर्यावरण जागरूकता तथा बुद्धि आपस में समबन्धित है। ग्रामीण परिवेश में उच्च बौद्धिक क्षमता वाले लड़के निम्न बौद्धिक क्षमता

वाले लड़कों से पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक पाये गये। इसी तरह नगरीय परिवेश के उच्च बौद्धिक क्षमता के लड़के निम्न बौद्धिक क्षमता वाले लड़कों से सार्थक रूप से भिन्न पाये गये।

हमारे अध्ययन के परिणाम डॉ0 कुमुद घोष असिस्टेन्ट प्रोफेसर शिक्षा विभाग मोशचरी आसाम से मिलते है उन्होंने पर्यावरण जागरूकता तथा अभिवृत्ति को पर्यावरण शिक्षा के सम्बन्धित किया तथा उच्च व सकारात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त किया।

Table no.- 2 का अवलोकन करने के पश्चात् पाया गया कक्षा 10 में अध्ययनरत लड़के–लड़कियों की पर्यावरण जागरूकता में अन्तर नहीं पाया गया। इसी तरह का परिणाम मि0 शिवकान्त तथा मि0 योगेश कुमार के अध्ययन द्वारा प्राप्त किया गया उन्होंने सेकेण्डरी स्कूल के विधार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा लड़के व लड़कियों की पर्यावरण जागरूकता में कोई भिन्नता प्राप्त नहीं की।

Table no.- 3 का विश्लेषण पता चलता है कि 12 वीं कक्षा में अध्यनरत लड़के–लड़कियों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया। लड़के–लड़कियों की अपेक्षा पर्यावरण अधिक जागरूक पाये गये। इसी तरह के परिणाम M. Sivamoorthy, R. Nalin तथा C. Satheesh Kumar Pondicherry University प्राप्त हुए हैं। उन्होंने कालेज विधार्थियों के पर्यावरण जागरूकता के प्रति उनका व्यवहारिक अनुप्रयोग पर अध्ययन कर पाया कि लड़के–लड़कियों की अपेक्षा पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक होते हैं।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विधार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूक है। कक्षा 10 तथा 12 वीं में अध्ययनरत विधार्थियों में 12 वीं कक्षा के विधार्थी पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हैं। तथा लड़के पर्यावरण के प्रति लड़कियों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक सचेत पाये गये। पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्यावरण शिक्षा पर्यावरणीय अनुबोधन, पुर्नबलन तथा पुर्ननिवेश तकनीक का महत्वपूर्ण स्थान है। पर्यावरण के प्रति सकारात्मक व्यवहार विकसित करके तथा नकारात्मक व्यवहार विकसित करके तथा नकारात्मक व्यवहार को नियमित करने के लिये इस तकनीकों का उपयोग किया जाता है। पर्यावरण शिक्षा का लक्ष्य विधार्थियों को भौतिक व सामाजिक पर्यावरण की पूर्ण जानकारी देना तथा जागरूकता बढ़ाना है। पर्यावरण अध्ययन द्वारा विधार्थी स्वयं अपने प्राकृतिक व सामाजिक पर्यावरण को खोजने तथा जानने का प्रयास करता है जिससे पर्यावरण समस्यओं का समाधान करते हुए जीवन का विकास कर सके। पर्यावरण जागरूकता केवल पर्यावरण की जानकारी देती है परन्तु पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति में उन अभिकृतियों, मूल्यों तथा सार्वजनिक कौशल का विकास करती हैं जो प्रयोगात्मक तथा व्यावहारिक होते हैं जिससे पर्यावरण संरक्षित तथा स्वस्थ जीवन का आधार बनता है।

पर्यावरणीय मनोवैज्ञानिक पर्यावरण संरक्षण के लिये व्यक्ति में दृष्टिकोण तथा मनोभावों में परिवर्तन की वकालत करते हैं जिसके लिये पर्यावरण शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जिससे व्यक्ति के मनोभावों तथा अभिवृति सकारात्मक परिवर्तन सम्भव है जिससे व्यवहार परिवर्तित होता है तथा व्यक्ति वैकल्पिक उपायों के प्रति सजग होकर उन्हें अपनाने का प्रयास करता है। पर्यावरण शिक्षा आज प्रत्येक स्तर पर पाठयक्रम में समाहित कर दी गयी है। प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा तीनों पर पाठयक्रम के रूप में अनिवार्य है। जिसमें पास होना आवश्यक है। पर्यावरण शिक्षा हेतु महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में सेमिनार तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है तथा सरकारी–गैरसरकारी व निजी स्तरों पर भी कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। जिसका उद्देश्य ही पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है।

पर्यावरण संरक्षण एवं सन्तुलन के लिये राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय योजनाएँ बनायी गयी तथा अनेक लक्ष्य भी किये गये तथा इन सम्मेलनों से विकसित देश एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप अधिक लगाते हैं जबकि कार्बन उत्सर्जक दर में कभी का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाता हे। विभिन्न समीक्षाओं द्वारा स्पष्ट है कि मानव विकास ही पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण है लेकिन मानव प्रगति एवं पर्यावरण सन्तुलन एक दूसरे के परस्पर विरोधी नहीं होने चाहिए। विश्व आयोग के अनुसार, ''सतत् विकास एवं प्रगति वह प्रक्रिया है जो केवल वर्तमान तक सीमित नहीं रखी जानी चाहिए अपितु भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।''

Reference-

1. BPR Technologia A. Journal of Science, Technology and Management. Kant shive & Sharma Yogesh ISSN2278-8-8387 vol-2(1) 2013.
2. IOSR Journal of Humanitiee and social science (IOSR-JHSS) volume 19. Issue-3 ver-II (March 2014) pp-30-34, ISSN 2279-0837, PISSN 2279-0845 Ghosh Kumud Asst. Pro. Education Department Nakachari college Nakachari Jorhat Assam.
3. International Journal of Humanities and social science inventia ISSN (on line) 2319-7722 ISSN Print 2819-77 14 vol-2 issue 8- Agust 2013 pp-11-15 M. Sivamoorthy, R. Nalini, C. Sathesh Kumar, Pondichery University Pandichery
4. Nagar geetika (2011) : Environmental Psychology pp 233-235, 246
5. Altman 1 (1975): Environemtal and social